"उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए।"

"अपने आप पर विश्वास करो, यही सफलता का सबसे बड़ा रहस्य है।"

## स्वामी विवेकानंद – आत्मविश्वास और युवा शक्ति के प्रेरणास्रोत

स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में हुआ था। उनका बचपन का नाम नरेंद्रनाथ दत्त था। उनके पिता का नाम विश्वनाथ दत्त और माता का नाम भुवनेश्वरी देवी था। बचपन से ही नरेंद्र बहुत बुद्धिमान, जिज्ञासु और साहसी थे। उन्हें पढ़ने, संगीत और व्यायाम में विशेष रुचि थी।

युवा अवस्था में उनके मन में एक प्रश्न हमेशा उठता था – "क्या ईश्वर सचमुच हैं?" इस प्रश्न का उत्तर खोजते-खोजते उनकी मुलाकात महान संत Ramakrishna Paramahamsa से हुई। रामकृष्ण परमहंस ने उन्हें आध्यात्मिक ज्ञान और मानव सेवा का मार्ग दिखाया। उनके शिष्य बनने के बाद नरेंद्रनाथ दत्त को नया नाम मिला – स्वामी विवेकानंद।

अपने गुरु के निधन के बाद स्वामी विवेकानंद ने पूरे भारत का भ्रमण किया। उन्होंने देखा कि देश में गरीबी, अज्ञान और भेदभाव बहुत अधिक है। तब उन्होंने निश्चय किया कि वे लोगों को शिक्षा, आत्मविश्वास और सेवा का संदेश देंगे।

सन् 1893 में वे अमेरिका के शहर Chicago में आयोजित World's Parliament of Religions में भारत का प्रतिनिधित्व करने पहुँचे। अपने भाषण की शुरुआत उन्होंने "Sisters and Brothers of America" शब्दों से की। उनके इन शब्दों पर सभा में उपस्थित लोगों ने लंबे समय तक तालियाँ बजाईं। उन्होंने दुनिया को भारतीय संस्कृति, सहिष्णुता और मानवता का संदेश दिया।

स्वामी विवेकानंद का मानना था कि हर व्यक्ति के भीतर अपार शक्ति छिपी होती है। वे युवाओं को आत्मविश्वास, परिश्रम और अच्छे चरित्र का महत्व समझाते थे। उनका जीवन हमें सिखाता है कि यदि हम अपने ऊपर विश्वास रखें और लगातार प्रयास करें, तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं है।

### स्वामी विवेकानंद के प्रेरणादायक विचार

- "तुम्हें अंदर से बाहर की ओर विकसित होना होगा। कोई दूसरा तुम्हें महान नहीं बना सकता।"

*हमें क्या सीख मिलती है?*

*✓ अपने ऊपर विश्वास रखें।*
*✓ कठिन परिश्रम से कभी पीछे न हटें।*
*✓ शिक्षा और अच्छे चरित्र को महत्व दें।*
*✓ दूसरों की सेवा करना ही सच्ची महानता है।*

*स्वामी विवेकानंद केवल एक संत नहीं थे, बल्कि युवाओं के लिए आत्मविश्वास, साहस और सकारात्मक सोच की अमर प्रेरणा हैं।*